10

2018

हिन्दी विभाग
डॉ॰ कविता कुमारी सिंह

B.A, III

विषय — काव्य में अलंकारों का स्थान :—

मानव समाज सौंदर्योपासक है, उसकी उस प्रवृति ने ही अलंकारों को जन्म दिया है। शरीर की सौंदर्यता को बढ़ाने के लिए जिस प्रकार मनुष्य ने भिन्न-भिन्न प्रकार के आभूषणों का प्रयोग किया है, उसी प्रकार उसने भाषा को सुन्दर बनाने के लिए अलंकारों की योजना की। अपनी बात को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए चमत्कार अथवा रमणीयता का आश्रय लेना पड़ता है, उसी प्रकार काव्य को सुन्दर बनाने के लिए चमत्कार का आश्रय लेना पड़ता है। यही चमत्कार काव्य में 'अलंकार' कहलाता है। अतः हम कह सकते हैं कि अलंकार मनुष्य के मनोवेगों को चमत्कारी रूप में प्रकट करने का एक साधन है।

इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि "अलंकार वाणी के विभूषण है। इनके द्वारा अभिव्यक्ति में स्पष्टता, भावों में प्रभाविष्णुता और प्रेषणीयता तथा भाषा में सौंदर्य का सम्पादन होता है। स्पष्टता और प्रभावोत्पादन के हेतु वाणी अलंकार का रूप धारण करती है। इसलिए काव्य में महत्वपूर्ण स्थान है।" वाणी को अलंकृत करना ही अलंकारों का ध्येय है। काव्य में अलंकारों का वही स्थान है जो शरीर के लिए लौकिक आभूषणों का।

अलंकार शब्द की व्युत्पत्ति एवं लक्षण

अलंकार शब्द की रचना 'अलं' तथा 'ह' से हुई है, इस अलंकार शब्द का अर्थ है — 'सजावट'। 'अलं' का अर्थ है भूषण अर्थात जो अलंकृत करे वह अलंकार है — अलंकरोतीति अलंकारः'। 'आचार्य वामन' ने अलंकार को सौंदर्य का पर्यायवाची माना है। उनका कथन है — "काव्यं ग्राह्यमलंकारात। सौंदर्यमलंकारः। उनका स्पष्ट आशय है कि अलंकार गुणों

का उत्कर्ष करते हैं। स्वयं काव्य के साध्य न होकर वे साधन हैं।

आचार्यों की अलंकार विषयक मान्य भिन्न-भिन्न हैं। परिणामस्वरूप परवर्ती काल में काव्यशास्त्रियों का एक पक्ष काव्य के लिए अलं को अनिवार्य मानता है और दूसरा पक्ष गौण आचार्य मम्मट रसवादी आचार्य हैं, वे अलंक का उद्देश्य रस को पुष्ट करना मानते हैं। रीतिकालीन आचार्य केशवदास ने लिखा है —

"जदपि सुजाति सुलक्षणी सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषण बिन न विराजई कविता वनिता मित्त॥

किन्तु ध्वनि सिद्धान्त की प्रतिष्ठा होने पर काव्य में अलंकारों की नितान्त आवश्यकता अथवा अपरिहार्य नहीं र आचार्य विश्वनाथ ने मम्मट और आनन्द से प्रेरणा प्राप्त कर अलंकार का स्वरूप स्पष्ट करते हुए लिखा है — अलंकार व और अर्थ का अस्थिर धर्म है। वे अलंक को केयूर की भाँति शोभावर्द्धक तथा

रूप आत्मा का उपकारक मानते हैं। आचार्य
विश्वनाथ के इस मन्तव्य का आशय यह
है कि 'अलंकार काव्य के अनिवार्य गुण नहीं हैं।
वे अस्थायी धर्म हैं।' 'काव्य-शोभा अलंकार
पर निर्भर नहीं है, वह शोभा का कारण होकर
शोभा की वृद्धि करता है। काव्य का सौंदर्य 'रस'
है। इस मान्यताओं की स्थापना ध्वनिवादी आचा
ने की।

हिन्दी में अधिकांश आचार्यों ने इस विषय
में संस्कृत के आचार्यों का अनुकरण किया
'आचार्य केशव' अलंकारहीन कविता के अस्तित्व
स्वीकार नहीं करते।
'देव' अलंकृत काव्य को उत्कृष्ट मानते हैं
"कविता कामिनी सुखद पद, सुबरन सरस सुजा
अलंकार पहिरे अधिक अद्भुत रूप लख
आधुनिक आचार्यों में 'डॉ० रा
कुन्तल' ने अलंकार के कथन को रोचक
प्रभावपूर्ण प्रणाली माना है।' मैं अलंकार को
वर्णन प्रणाली मात्र समझता हूँ, जिसके अन्त
चाहे किसी वस्तु का वर्णन किया जा सकत